AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 04 | Issue 05| May 2023| *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 61-66

राष्ट्रीय एकता और मौलाना अबुल कलाम आजाद: एक अध्ययन

आशीष कु0 ठाकुर
अतिथि शिक्षक (इतिहास विभाग)
डॉ. एल.के.वी.डी. कॉलेज ताजपुर , (समस्तीपुर), बिहार

भारत एक ऐसा देश है जहाँ कई संस्कृति भाषा धर्म और सम्प्रदाय का जन्म हुआ | भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जिसमें इतने धर्म, सम्प्रदाय, भाषा और क्षेत्र के लोग एक साथ रहते हैं| भारतवासियों का धर्म, सम्प्रदाय, भाषा और अलग होते हुए भी इनमें प्रेम, एकता और भाईचारे का जो रंग दिखाई देता है वह इस देश की राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाता है और यही इस विशाल देश की सुन्दरता भी हैं| देखा जाए तो भारत में राष्ट्रीय एकता का जो रूप आज हम सभी के नज़रों के सामने है वो नया नहीं है| ये आपसी भाईचारा और एकता सदियों से हमारी संस्कृति में रही हैं और इसी एकता ने भारत के विकास में बहुत योगदान दिया हैं| चाहे उस समय की बात की जाए जब हम अंग्रेजों से अपनी आजादी के लिए लड़ रहे थे या उस समय की जब हमारा देश पूरे विश्व में सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था हर समय में भारतवासियों की एकता ने भारत को अपने लक्ष्य तक पहुँचाया है| राष्ट्रीय एकता का यही वो जज्बा था जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी और पूरे देश को पथ पर लाकर एक लक्ष्य के लिए लड़ने का मार्ग प्रशस्त किया | कई बार जब स्वतंत्रता संग्राम के समय हिन्दुस्तानियों के कदम डगमगाने लगे तो हमारे राष्ट्रीय नेताओ और स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय एकता का प्रचार किया और इसको मजबूत किया |
ऐसे नेताओं में खासतौर पर मौलाना अबूल कलाम आजाद, महात्मा गाँधी, खान अब्दुल गफ्फार खान, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल जैसे सैकड़ों नेताओं के नाम शामिल हैं जिन्होंने सम्प्रदायिकता के उस भयावह दौर में भी राष्ट्रीय एकता को बचाने में सफल रहे| इस आलेख में हम मौलाना आजाद के राष्ट्रीय एकता के लिए की गयी कोशिशों की बात करेंगे|

मौलाना अबुल कलाम आजाद एक महान व्यक्ति थे जिनमें आकाश की ऊँचाई, पहाड़ों की मजबूती और समन्दरों की गहराई थी| मौलाना आजाद के अन्दर शैक्षणिक, साहित्यिक, राजनैतिक एवं धार्मिक समझ का एक सुन्दर मिलावट था और इनमें से किसी एक को दुसरे से अलग नहीं किया जा सकता| इसलिए उनकी सभी विशेषताओं से हटकर उनके सिर्फ एक पहलू यानि राष्ट्रीय एकता के विचार कुछ कहना बहुत ही कठिन काम है | फिर भी मौलाना आजाद के राष्ट्रीय एकता के जज्बे को उजागर करने की एक कोशिश की जा रही हैं |

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Ashish Kumar Thakur Guest Lecturer, Dept. of History Dr. L.K.V. D. college Tajpur(Samastipur), Bihar,India Email: kumarashishdmk123@gmail.com	

मौलाना आजाद के पिता मौलाना मोहम्मद खैरूद्दीन बहुत बड़े आलीम थे जो 1857 के विद्रोह में शामिल थे और 1857 में दिल्ली पर अंग्रेजों का कब्जा होने के बाद मक्का (सo अरब) में जा बसे और यहीं 11 नवम्बर 1888 ईo को मौलाना खैरूद्दीन के घर इस बच्चे का जन्म हुआ | जिसका नाम फिरोज बख्त गुलाम मुहिउद्दीन रखा गया जो आगे चलकर भारत के इतिहास में मौलाना अबुल कलाम आजाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ | मौलाना खैरूद्दीन 1898 ईo में हिन्दुस्तान वापस आ गए और कलकत्ता में रहने लगे | मौलाना आजाद को पढ़ने का राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति के अध्ययन की झलक दिखाई दी जो राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता संग्राम को कमजोर कर रही थी | बस क्या था मौलाना ने इस समस्या को ख़त्म करने की कोशिश शुरू कर दी और यहीं से स्वतंत्रता संग्राम में मौलाना के पत्रकारिता और राजनैतिक सफ़र की शुरूआत हुई |

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय एकता में मौलाना आजाद का जो किरदार रहा है उसे भारत की राजनैतिक आजादी की कोशिशों में साफ – साफ देखा जा सकता है | मौलाना आजाद प्रारंभ से ही हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे और इसका प्रचार भी करते रहे | मौलाना आजाद ने 'अल हिलाल' और 'अल बलाग' जैसे समाचार पत्रों का संपादन किया और इसमें राष्ट्रीय एकता की बातों को स्पष्टता से छापना शुरू किया | मौलाना आजाद ने अपने समाचार पत्रों के जरिये अंग्रेजो की नींद उड़ा दी | 1915 में महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे | गांधीजी अभी हिन्दुस्तान की राजनीति का अध्ययन ही कर रहे थे लेकिन मौलाना आजाद उस समय अपना देश भक्ति और राष्ट्रीय एकता के विचारों के कारण अंग्रेजों की सरकार के लिए खतरनाक व्यक्ति घोषित किए जा चुके थे | पहले अंग्रेजों ने उनके अख़बार अल हिलाल को बंद करवा दिया उसके बाद मौलाना ने अल बलाग नामक अखबार निकाला इसे भी अंग्रेजों ने बंद करावा दिया | उन्हें बंगाल से निष्कासित कर दिया गया था और रांची में वह नजरबंदी की जिंदगी गुजारने पर मजबूर कर दिये गये थे | गाँधीजी चम्पारण सत्याग्रह के दौरान जब बिहार में थे तो उन्होंने मौलाना से मिलने की कोशिश भी की लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें मिलने नहीं दिया | मौलाना अपनी नौजवानी से ही देश भक्ति के जज्बो से ओत पोत थे | इसी जज्बे ने उन्हें क्रांतिकारियों के नजदीक लाया | मौलाना आजाद एक बेहतरीन साहित्यकार भी थे और उनके साहित्य में भी राष्ट्रीयता की झलक मिलती है | जैसे मौलाना आजाद ने रांची में नजरबंदी के दौरान एक मशहूर लेख "जामिउल शवाहिद फिरखूल गैर मुस्लिम फिल मसाजिद" लिखा | इस लेख में मौलाना आजाद उस समय की एक घटना पर लिखते हैं, जो घटना ये थी की पहली बार जब दिल्ली की जामा मस्जिद में एक हिन्दू धर्म गुरु को भाषण देने के लिए बुलाया गया तो अंग्रेजों को ये बात खटक गयी अंग्रेज जब उन्हें (हिन्दू धर्म गुरु) गिरफ्तार करने आये तो मुसलमानों ने उन्हें घेर लिया जिससे अंग्रेज उन्हें गिरफ्तार नहीं कर पाए तो अंग्रेजों ने साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले मौलानाओं के जरिए समाचारपत्रों में ये बयां दर्ज कराया कि किसी गैर मुस्लिम को मस्जिद में बुलाना इस्लाम के खिलाफ है| इसी बात के विरोध में मौलाना आजाद ने लेख लिखा और कुरान के व्याख्यानों द्वारा ये साबित किया कि किसी गैर – मुस्लिम का मस्जिद में आना गलत नहीं हैं | इसी प्रकार जब गाँधी युग आया तो मौलाना आजाद गांधीजी के समर्पित सिपाही सिध्द हुए | मौलाना आजाद की गाँधीजी से मुलाकात 20 जनवरी 1920 को दिल्ली में हुई जबकि गांधीजी उनसे रांची में ही मिलना चाहते थे लेकिन सरकार ने नहीं मिलने दिया था | गांधीजी से प्रभावित होने के बाद मौलाना आजाद ने खिलाफत आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन में भरपूर हिस्सा लिया और समस्त जीवन महात्मा गांधी के नक़्शे कदम पर चलना शुरू किया और जीवन भर उसी रास्ते पर चलते रहे | जिस प्रकार गांधीजी धार्मिक होते हुए भी पुरी तरह सेक्यूलर रहे उसी प्रकार मौलाना आजाद धार्मिक होते हुए भी पूरी तरह सेक्यूलर थे | इसके सम्बन्ध में गांधीजी ने अपनी किताब, Pen Potrayal & Tribute में लिखते हैं कि :-"मुझे मौलाना आजाद के साथ मिलकर 1920 से देश और राष्ट्र की सेवा करने का गौरव हासिल हैं उनसे बेहतर इस्लाम को सही तौर पर समझानेवाला दुसरा कोई नहीं हैं | वे अरबी भाषा के बहुत बड़े ज्ञानी हैं | उनकी

राष्ट्रभक्ति उसी प्रकार मजबूत और पक्का हैं जिस प्रकार उनका इस्लाम में इमां और यकीन | आज वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष हैं |

मौलाना अबूल कलाम आजाद दो बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए और दोनों बार ही उन्होंने कांग्रेस को अच्छा नेतृत्व प्रदान किया | 1923 के दिल्ली में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में मौलाना कांग्रेस के सबसे युवा अध्यक्ष बने और अपनी अध्यक्षता परिवर्तनवादी और परिवर्तन विरोधी के बीच बढ़ रही खाई की भरपाई किया और कांग्रेस पार्टी को दुबारा मजबूत किया | दूसरी बार कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में 1940 में अध्यक्ष बने और 1946 तक इस पद पर रहकर स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम समय में पार्टी का नेतृत्व संभाला और आन्दोलनों की रूपरेखा तैयार की और आन्दोलन को मजबूती प्रदान किया | मौलाना आजाद 1940 से 1946 तक सबसे अधिक समय तक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे | मौलाना आजाद की भाषण शैली इतनी स्पष्ट और सुन्दर थी कि उनकी बात समझने में किसी को समय नहीं लगता था वे अपने भाषणों से सभी को मंत्र मुग्ध कर देते थे ऐसा लगता था कि जैसे वे अपनी वाणी में पुतले में भी जान फूंक सकते थे | अंग्रेज उनसे इतना डरते थे कि उन्होंने मौलाना आजाद के किसी भी कार्यक्रम में भाषण देने पर रोक लगा दिया गया लेकिन इसकी परवाह किए वगैर मौलाना आजाद ने मार्च 1920 में लाहौर और अमृतसर के कार्यक्रमों तकरीरे की और अंग्रेज सरकार को ललकारा भी उन्होंने कहा था कि- "अगर इस वक्त कानून के खिलाफ करने का आमतौर से हुक्म नहीं दिया गया है लेकिन मेरे लिए अफजलियत इसमें है कि खिलाफ वाजी करूँ और सच्चाई के ऐलान से बाज न आऊँ |

मौलाना आजाद को हमेशा कोशिश होती है कि लोग एकजूट रहें और इसकी झलक उनके हर भाषण में दिखाई देती है वे जब कांग्रेस के अध्यक्ष रहे तो उन्होंने दोनों बार सबसे अधिक हिन्दू मुस्लिम एकता पर जोर दिया और राष्ट्रीय एकता का भरपूर समर्थन किया जिसकी झलक उनके अध्यक्षीय भाषणों में नजर आता है| 1923 में मौलाना आजाद ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दिल्ली के विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता 34 वर्ष की आयु में किया जिसमें उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में साम्प्रदायिकता पर तंज कसते हुए कहा था कि:- "आज हमें सिर्फ एक संगठन की जरूरत है और वो हैं इंडियन नेशनल कांग्रेस | आज अगर एक फ़रिश्ता आसमान की बुलंदियों से उतरकर दिल्ली के क़ुतुबमीनार पर खड़े होकर ये ऐलान करे कि आजादी चौबीस घंटे के अन्दर मिल सकती है बशर्ते कि हिन्दुस्तान हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद से दश्त बदीर हो जाये तो मैं आजादी से दस्तबरदार हो जाऊंगा क्योकि अगर हमें आजादी मिलने में देर हुई तो यह हिन्दुस्तान का नुकसान होगा लेकिन अगर हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद (एकता) जाती रही तो ये आलमें इंसानियत का नुकसान होगा |"

मौलाना आजाद सारी उम्र राष्ट्रीय एकता और गंगा यमुनी संस्कृति के समर्थक रहे | उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने की हर संभव कोशिश की | मौलाना आजाद ने अपनी पत्रिकाओं, पुस्तक और तकरीरों में हिन्दू मुस्लिम एकता पर जोर दिया और हिन्दुस्तानियों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए जागृत किया | साम्प्रदायिकता के उस खतरनाक दौर में भी जब जिन्ना जैसे बड़े नेताओं ने धार्मिक अलगाव को बढ़ावा दिया और खुद को एक धर्म के मानने वालों के नेता के रूप में पेश किया लेकिन मौलाना आजाद डटे रहे और उन्होंने किसी एक धर्म का नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान का नेतृत्व किया और अपने धार्मिक क्रियाकलाप को अपने निजी जीवन तक ही सीमित रखा कभी भी उसे राजनीतिक या सामाजिक जीवन पर हावी नहीं होने दिया | इस संबंध में सैय्यद इरफान हबीब मौलाना आजाद की जीवनी में लिखते हैं कि :- "मौलाना आजाद, हकीम अजमल खां, डाo एम.एन. अंसारी, खान अब्दुल गफ्फार खां और हसरत मोहानी जैसे नेताओं की श्रेणी में आते थे जो अपने आप को मुस्लिम नेता कहलाना पसंद नहीं करते थे, हालांकि निजी जीवन में ये सभी समर्पित मुस्लिम थे लेकिन खिलाफत आन्दोलन को छोड़कर उन्होंने सार्वजनिक जीवन में अपने धर्म को कभी सामने नहीं आने दिया |"

मौलाना आजाद ने हमेशा मुस्लिम लोग, मुहम्मद अली जिन्ना और कट्टरपंथियों को राष्ट्रीय एकता में बाधक मानते थे | जिसकी वजह से मुस्लिम लोग हमेशा मौलाना आजाद का विरोध किया और जिन्ना भी उन्हें अपना सबसे बड़ा प्रतिद्वन्दी मानते थे | जिन्ना ने तो एक पत्र में मौलाना आजाद से भी कह दिया था कि – कांग्रेस आपको शो बआंय के तौर पर अध्यक्ष बना रखी हैं..... आप किसी के नेता नहीं है न मुसलमानों के और न हिन्दुओं के..... |" लेकिन मौलाना डगमगाए नहीं और अपने कार्यों को पूरा करने में लगे रहे | उन्होंने विभाजन को रोकने और हिन्दू मुस्लिम एकता को बनाए रखने की हर संभव कोशिश की उन्होंने सभी नेताओं से भी कहा कि भारत शांति बनाए रखने के लिए हिन्दू मुस्लिम एकता को बढावा दे | इस संबंध में महात्मा गाँधी के करीबी रहे महादेव देसाई मौलाना अबुल कलम आजाद की जीवनी में लिखते हैं कि :- "आजाद ने कहा कि हजार साल पहले नियति ने हिन्दुओं और मुसलमानों को पहले साथ आने का मौका दिया | हम आपस में लड़े जरुर लेकिन सगे भाइयों में भी लड़ाई होती है हम दोनों के बीच मतभेदों पर जोर देने से कोई फल नहीं निकलेगा क्योंकि दो इंसान एक जैसे ही तो होते हैं | शांति के हर समर्थक को इन दोनों के बीच समानता पर जोर देना चाहिए |" मौलाना आजाद भी साम्प्रदायिकता को कम करने और विभाजन को रोकने के लिए प्रयासरत रहे | उन्होंने हमेशा मुसलमान नेताओं से मिलकर उन्हें राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने की सीख दी जिसका असर ये हुआ कि मुस्लिम उलेमाओं और मुस्लिम धर्मगुरुओं का एक बड़ा भाग मुस्लिम लीग के विचारों और दो राष्ट्र के सिध्दांतों का विरोधी था | 6% मुसलमान ही करते थे | मुस्लिम लीग के दो राष्ट्र के सिध्दांत पर चोट करते हुए राष्ट्रीय एकता के समर्थन में कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में मौलाना का अध्यक्षीय भाषण ऐतिहासिक महत्व का होते हुए उनकी अपनी शैली का भी मील का पत्थर माना जाता है | आज की परिस्थिति में जबकि हिन्दुओं और मुसलमानों को फिर से बाँट कर सत्ता प्राप्ति का घिनौना खेल चल रहा है तब उनकी भाषणों की प्रासांगित्ता बनी हुई है | वहाँ उन्होंने कहा है कि :- "मैं मुसलमान हूँ और फख्र के साथ महसूस करता हूँ कि मैं मुसलमान हूँ | इसी तरह मैं फख्र के साथ महसूस करता हूँ कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ | मुझे अपने हिन्दुस्तानी होने पर गर्व है | जिस तरह एक हिन्दू फख्र के साथ कह सकता है कि वह हिन्दुस्तानी है | ठीक उसी तरह हम भी बड़े फख्र के साथ कह सकते हैं कि हम हिन्दुस्तानी हैं और मजहबे इस्लाम के पैरोकार हैं|"

मौलाना आजाद मुस्लिम लीग द्वारा एक मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान के मांग को गलत बताया और आखरी समय तक विभाजन के विरोध रहे | उनके अनुसार ये समस्या का हल नहीं था बल्कि एक बहुत बड़ी समस्या ही थी जिसका असर पूरे हिन्दुस्तान पर पड़ेगा और विभाजन के बाद भी दोनों देश इस समस्या से जूझते रहेंगे | मौलाना आजाद ने विभाजन का विरोध न सिर्फ राजनीतिक और सांस्कृतिक स्तर पर किया बल्कि धार्मिक स्तर पर भी | विभाजन को वे न सिर्फ हिन्दुस्तान के लिए नुकसानदेह मानते थे बल्कि खुद मुसलमानों के लिए भी बहुत नुकसानदह समझते थे | उन्होंने हिन्दुस्तान के बँटवारे की माँग को इस्लाम के सिध्दांतों के विरूध्द बताया और सिर्फ मौलाना आजाद ही नहीं बल्कि इस्लाम के उलेमानओं मुस्लिम धर्मगुरुओं और मुसलमानों का एक बहुत बड़ा हिस्सा विभाजन का विरोधी था | मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खान और महात्मा गाँधी जैसे बहुत सारे नेता विभाजन के विरोधी थे | जब सरदार पटेल और पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा कांग्रेस पार्टी ने भी मौलाना आजाद गाँधीजी के साथ विभाजन का विरोधी करते रहे और उसे रोकने के प्रयास में लगे रहे | मौलाना को उस समय झटका लगा जब महात्मा गाँधी ने कहा कि विभाजन को नहीं रोका जा सकता है, इससे उनकी हिम्मत टूट गयी और वे भी मजबूर होकर विभाजन का स्वीकार कर लिए और कर भी क्या सकते थे अंग्रेजों ने जो नफ़रत का बीज बोया था उसका पेड़ इतना मजबूत और विशाल हो चुका था कि सारी कोशिशें बेकार हो गयीं और अंततः अगस्त 1947 में भारत का विभाजन हो गया | पूरे देश में नफ़रत की हवा चल रही थी हर जगह दंगा और खून खराबा था | कुछ लोगों की गलतियों और साजिशों की सजा बेकसूर नफरत की आग में जला | लेकिन इन सब के बाद भी मौलाना आजाद ने राष्ट्रीय एकता और प्रेम-शांति का प्रचार करते रहे और महात्मा गाँधी जैसे नेताओं के साथ भारत में शांति स्थापित करने के प्रयास में

लगे रहे | भारत के विभाजन के बाद दंगों के बीच मुसलमानों की बड़ी संख्या में पाकिस्तान जाने का जो सिलसिला कायम था मौलाना आजाद ने उसका भी विरोध किया और उन्हें समझाया | 24 अक्टूबर 1947 को दिल्ली की जामा मस्जिद से पूरे हिन्दुस्तान के मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए मौलाना आजाद ने कहा था कि – "तुम कहाँ जा रहे हो और क्यों जा रहे हो? ये देखो मस्जिद के बुलंद मीनार तुमसे सवाल करते है कि तुमने अपनी तारीख के सफहात को कहाँ गूम कर दिया है? अभी कल की बात है यमुना के किनारे तुम्हारे काफिलों ने किया था और आज तुम हो की तुम्हे यहाँ रहते हुए खौफ महसूस होता है |

हालांकि दिल्ली तुम्हारे खून से सिंची हुई है अजीजों अपने अन्दर बुनियादी तबदीली पैदा करो | मुस्लमान और बुजदिली एक जगह जमा नहीं हो सकती |"

मौलाना आजाद ने हिन्दुस्तान की आजादी के लिए राष्ट्रीय एकता को सबसे बड़ा हथियार बनाया और भारत के विकास और देश में शांति का माहौल बनाये रखने के लिए एकता प्रेम और भाईचारें को पैगाम दिया और अपनी तमाम उम्र यहाँ तक कि अपने जीवन के अंतिम समय तक एकता प्रेम शांति और भाईचारें का समर्थन करते रहे | मौलाना आजाद के सम्बन्ध में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डाo राजेंद्र प्रसाद अपनी किताब इंडिया डिवाइडेड (India Divided) में लिखते हैं कि :- "वो हिन्दू मुस्लिम एकता के जबरदस्त समर्थक थे और इस बात पर जीवन भर चट्टान की तरह खड़े रहे | मुश्किल समस्याओं को हल करने के लिए उनकी राय हमेशा काम आती थी | "मौलाना आजाद विभिन्न गुणों के मालिक थे और ये सारे गुण जो उनको एक महान व्यक्ति बनाते हैं वो बचपन से ही उनमें थे | बचपन में जब वो तकरीर करते थे तो लगता था कि कोई बहुत ही उम्रदराज और तजुर्बेकार व्यक्ति बोल रहा हो | इस संबंध में सरोजिनी नायडू कहती हैं कि:- "आजाद जिस दिन पैदा हुए थे तो उसी दिन पचास साल के हो गये थे|"

आजादी के बाद जब मौलाना आजाद शिक्षा मंत्री बने तब भी उन्होंने देश की तरक्की के लिए एकता और शिक्षा को सबसे आवश्यक बताया | मौलाना ने शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए बहुत सारे काम किए और कई संस्थाओं की स्थापना भी की जो आज भी देश की शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं | मौलाना आजाद ने आधुनिक और वैज्ञानिक शिक्षा को भरपूर प्रोत्साहन दिया | मौलाना आजाद शिक्षा मंत्री बने ये मौलाना आजाद का सौभाग्य नहीं था बल्कि ये शिक्षा मंत्रालय का सौभाग्य था कि उसकी जिम्मेदारी मौलाना आजाद जैसे व्यक्ति को मिली और मौलाना आजाद के बाद इस मंत्रालय को ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला | लेकिन हिन्दुस्तान के बाग का यह खूबसूरत और खुशबूदार फूल जिसने पूरे हिन्दुस्तान को अपनी खुशबू से मदहोश कर दिया था वो मौलाना आजाद 22 फरवरी 1958 को मृत्यु को प्राप्त हो गए | भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने मौलाना आजाद को श्रधांजलि देते हुए कहा था कि:- "किसी महान व्यक्ति की मृत्यु पर ये कहना बड़ी समस्या सी की बात होकर रह गयी है कि अब उनकी आजादी की मृत्यु का संबंध है, यह बात शत-प्रतिशत सही हैं | सिर्फ यही नहीं की मैंने मौलाना के ज्ञान से फायदा हासिल किया हैं बल्कि समय-समय पर मौलाना के ज्ञान के सामने मुझे अपना ज्ञान दरिया के सामने कतरा (बूंद) दिखाई दिया है | मौलाना आजाद जैसा व्यक्ति दोबारा पैदा होना मुमकिन नहीं है| मेरी नजर में अब कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो उनकी जगह ले सके|"

अत: निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि मौलाना आजाद ने समय की माँग को समझा और समय की माँग थी कि अगर हमें स्वराज्य चाहिए तो सभी को हर चीज से ऊपर उठ कर दूसरे के साथ खड़ा होना होगा और मौलाना आजाद ने इस कार्य को बखूबी पूरा किया और अपना पूरा जीवन देश की एकता को समर्पित कर दिया | मगर साम्प्रादायिकता का जो बीज अंग्रेजों ने बोया था वो आज भी फल फूल रहा है | आज भी सत्ता के भूखे लोग साम्प्रदायिकता की आग भड़काकर अपनी रोटी सेंकने में लगे हैं और धर्म, जात, भाषा, क्षेत्र और सम्प्रदाय के नाम पर लोंगों को आपस में लड़ा कर सत्ता पाने का घिनौना खेल खेलते हैं, जिससे देश में अराजकता फैलती है | फिर इस दौर

में जब हमारा देश साम्प्रदायिकता और अनेकता की ओर बढ़ रहा है | ऐसे समय में देशवासियों को मौलाना अबूल कलाम आजाद, महात्मा गाँधी, मौलाना हसरत मोहनी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, खान अब्दुल गफ्फार खान, भीमराव अम्बेडकर, हकीम अजमल खान, सरदार बल्लभ भाई पटेल, डाo जाकिर हुसैन और डाo राजेन्द्र प्रसाद जैसे महापुरूषों के बताए हुए रास्ते पर चलकर हम भारत में साम्प्रदायिकता के विकास को रोककर राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाया जा सकता हैं जिससे हमारा देश विकास की दौर में तेजी के साथ बढेगा|

संदर्भ सूची-

1. कौल-ए-फैशल – मौलाना अबूल कलाम आजाद
2. इंडिया विन्स फ्रीडम(Autobiography)– मौलाना अबूल कलाम आजाद
3. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा संवैधानिक विकास बीo एलo ग्रोवर, यशपाल पृष्ट संo – 107
4. वही पृष्ठ संo - 111
5. वही पृष्ठ संo – 225
6. भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतहास – डाo पुखराज जैन पृष्ठ संo – 261 से 263
7. Maulana Aazad (Biography) – सैय्यद इरफान हबीब
8. Maulana Abul Kalam Aazad (Biography) – महादेव देसाई
9. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष – बिपिन चन्द्र पृष्ठ संo –330
10. वही पृष्ठ संo – 337 से 338
11. वही पृष्ठ संo – 340
12. भारत का मुक्ति संग्राम – अयोध्या सिंह पृष्ठ संo – 414
13. वही पृष्ठ संo –676
14. वही पृष्ठ संo –682
15. वही पृष्ठ संo –708 से 714

■ ■ ■